



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

थनैला रोग के कारण और बचाव के उपाय

(नवीन कुमार एवं अमित कुमार)

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार- 125004 (हरियाणा)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: nknaveen420116@gmail.com

थनैला एक ऐसा रोग है जो दूध देने वाले पशुओं में होने वाली सामान्य स्वास्थ्य समस्या है। यह रोग गाय, भैंस और बकरी जैसे दूध देने वाले पशुओं में आमतौर पर पाया जाता है। थनैला से प्रभावित पशु का दूध कम हो जाता है और इसका कारण पशुपालकों को नुकसान होता है।

थनैला का कारण

थनैला के होने का मुख्य कारण बैक्टीरिया होते हैं, जो अयन में प्रवेश कर इन्फेक्शन का कारण बनते हैं। इन्फेक्शन के कारण अयन में सूजन हो जाती है और पशु को दुखी और बेचैन महसूस होता है। थनैला के कुछ अन्य प्रमुख कारण हैं:

1. गंदी और अस्वच्छ दूध दुहने की तकनीक: दूध दुहने के समय की साफ सफाई की अव्यवस्था थनैला के लिए सुरक्षित माहौल पैदा करती है।
2. अधिक दूध देने वाले पशु: अधिक दूध देने वाले पशुओं को थनैला का खतरा ज्यादा होता है, क्योंकि इनमें दूध के भरे होने के कारण उनके अयन अधिक संवेदनशील होते हैं।
3. अप्राकृतिक दूध दुहना शुरू करना: पशुपालकों के द्वारा अप्राकृतिक दूध दुहना शुरू करने से भी थनैला का खतरा बढ़ जाता है।
4. जीवाणु संक्रमण: दूध दुहने की तकनीक के अनुपालन से यदि अयन में जीवाणु संक्रमण हो जाता है, तो थनैला होने की संभावना बढ़ जाती है।

थनैला के लक्षण

थनैला के कुछ प्रमुख लक्षण हैं, जिनसे पहचान किया जा सकता है कि पशु थनैला से प्रभावित हो रहा है।

1. अयन में सूजन: थनैला के प्रमुख लक्षण में से एक है अयन में सूजन। सूजन के कारण अयन गरम और ठीक से नहीं खुलते हैं।
2. दूध कम होना: थनैला से प्रभावित होने पर पशु का दूध कम हो जाता है और वह धीरे-धीरे दूध देना बंद कर देता है।
3. दूध में छेछड़े: थनैला से प्रभावित पशु के दूध में छेछड़े दिखाई देते हैं या रोगी पशु का दूध गाढ़ा और मवाद जैसा होता है।
4. दर्द होना: दूध के निकलने के समय पशु को दर्द की समस्या होती है।
5. धन का सिकुड़ जाना: थनैला से प्रभावित होने पर पशु के धन का सिकुड़ जाना शुरू हो जाता है।

थनैला का नियंत्रण और रोकथाम

थनैला के नियंत्रण और रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपायों को अपनाना चाहिए:

1. स्वच्छता का ध्यान रखें: दूधार के समय स्वच्छता का पूरा ध्यान रखना चाहिए। पशु के अयन को और उसके चारों ओर के क्षेत्र को स्वच्छ और साफ रखना बहुत महत्वपूर्ण है। पशु के दूध निकालने से पहले और बाद में हाथों और धनों को साफ पानी से धोएं।
2. सही दूध दुहने की तकनीक का पालन करें: पशुपालकों को सही दूध दुहने की तकनीक का पालन करना थनैला के खतरे को कम करता है अर्थात् पूर्ण हाथ से दूध निकालने की तकनीक का प्रयोग करना चाहिए।
3. दूध दुहने की तकनीक में प्रगति के लिए प्रशिक्षण: पशुपालकों को सही दूध दुहने की तकनीक का प्रशिक्षण लेना चाहिए ताकि वे थनैला से प्रभावित होने से बच सकें। दूध निकालते समय अंगूठे का प्रयोग न करें।
4. जीवाणुवादी औषधि का उपयोग करें: दूध दुहने के समय जीवाणुवादी औषधि का उपयोग करना थनैला के खतरे को कम करता है अर्थात् दूध निकालने के बाद थनों को 0.01 प्रतिशत पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से धोएं।
5. चिकित्सा का समय पर उपयोग: अगर किसी पशु को थनैला हो जाता है तो उसे समय पर चिकित्सा करना बहुत महत्वपूर्ण है। ध्यान देना चाहिए कि दवाइयां उचित तरीके से दी जाएं।
6. पशु के तलते समय ब्यांत के आखिरी बार में दूध निकालें उस समय थनों में एंटीबायोटिक की ट्यूब लगाकर छोड़ दें जिसमें अगली बार ब्याने तक बना का थनैला रोग से बचाव होता रहे।
7. दूध निकालने के तुरंत बाद पशुओं को बैठने ना दें इसके लिए पशु को चारा व दाना डालें। जहां पर पशुओं को बांधा जाता है वहां की सफाई रखें।

थनैला का नियंत्रण और रोकथाम करने के लिए सही दूध दुहने की तकनीक का पालन करना और स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है। इन उपायों को अपनाकर पशुपालक भाइयों को थनैला रोग से बचने में मदद मिलेगी और उन्हें आर्थिक हानि से बचाने में सहायता होगी।